CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक होते हैं। यदि प्रकाशक नहीं हों, तो लेखकों की कृतियों को लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत कौन करेगा और यदि लेखक नहीं हों, तो प्रकाशन के व्यवसाय की शुरुआत कैसे हो, प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो ?

यह सत्य है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है, लेकिन तने के विस्तार को सब लोग देखते हैं और मूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है। प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर, शानशौकत अब सभी प्रमुख नगरों में हम देख सकते हैं। पर बेचारे लेखक को हम ढूँढने से ही पा सकते हैं।

इस स्वाभाविक स्थिति की विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है। मूल और तने के बीच का तनाव कभी सुफल नहीं ला सकता। इस विषम स्थिति से निकलने के लिए दोनों को यह सोचना होगा कि सामंजस्य कैसे स्थापित हो ?

सोचना इसलिए भी जरूरी है कि कुछ लोग इस तनाव को बढ़ाने की ही दिशा में काम करते नज़र आ रहे हैं। वे लेखक से कहते हैं, देखो, तुम्हारा कितना शोषण हो रहा है, ये प्रकाशक जोंक हैं जोंक। इनसे बचो। और प्रकाशक से कहा जाता है, अजी साहब, इस लेखक को जानता कौन था ? यह तो आप हैं, जिसने इसे आसमान पर चढ़ाया !

तनाव बढ़ता जा रहा है। दोनों की हानि हो रही है। यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। अत: इस पर चिंतन करना अनिवार्य है।

[10 अंक]

1(i). लेखक और प्रकाशक के बीच परस्पर कैसा संबंध है ? [1 अंक]

(A) फूल और पत्ते जैसा

(B) मूल और तने जैसा

(C) फल और शाखा जैसा

(D) कली और फूल जैसा

सही उत्तर: (B) मूल और तने जैसा

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त मूल और तने का रूपक लेखक तथा प्रकाशक की भूमिकाएँ स्पष्ट करता है।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानें गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है। लेखक रचना का सृजन करता है और प्रकाशक उसे पाठकों तक पहुँचाता है। इसलिए दोनों की भूमिका जड़ और तने के परस्पर संबंध जैसी है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को जाँचें (A) फूल और पत्ते, (C) फल और शाखा तथा (D) कली और फूल की तुलना गद्यांश में नहीं दी गई है। ये विकल्प वृक्ष के अंगों का उल्लेख अवश्य करते हैं, पर लेखक और प्रकाशक के लिए प्रयुक्त विशिष्ट रूपक से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक और प्रकाशक का संबंध मूल और तने जैसा है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रूपक वाले प्रश्न में गद्यांश में दी गई दोनों भूमिकाओं का क्रम भी मिलाएँ।

1(ii). प्रस्तुत गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के बीच किस प्रकार का संबंध बताया गया है ? [1 अंक]

(A) परस्पर सहयोग का

(B) पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का

(C) पारस्परिक प्रेम का

(D) पारस्परिक तनाव का

सही उत्तर: (D) पारस्परिक तनाव का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में आदर्श पूरकता के साथ वर्तमान संबंधों में आए तनाव का वर्णन है।
- मुख्य समस्या पहचानते समय पूरे गद्यांश में दोहराए गए भाव पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: वर्तमान स्थिति पहचानें गद्यांश में कहा गया है कि विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक संबंधों में तनाव पैदा करती है। आगे तनाव बढ़ने और दोनों की हानि होने की बात भी आती है। अतः वर्णित वर्तमान संबंध तनावपूर्ण हैं।

चरण 2: विकल्पों का भेद समझें (A) परस्पर सहयोग दोनों की अपेक्षित पूरक भूमिका है, पर वर्णित समस्या का उत्तर नहीं है। (B) प्रतिस्पर्धा का आशय एक ही लक्ष्य के लिए होड़ से है, जिसका उल्लेख नहीं है। (C) पारस्परिक प्रेम भी यहाँ वर्णित स्थिति नहीं है। (D) गद्यांश में बार-बार आए तनाव से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में पारस्परिक तनाव का संबंध बताया गया है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पूरक होने की आदर्श स्थिति और गद्यांश में वर्णित वर्तमान तनाव का अंतर पहचानें।

1(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट है।

कारण : लेखक को ढूँढना कठिन है जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि आसानी से दिखती है। [1 अंक]

(A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(C) कथन सही है, कारण गलत है।

(D) कथन गलत है, कारण सही है।

सही उत्तर: (A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण को अलग-अलग गद्यांश से सत्यापित करना आवश्यक है।
- सही कारण वह है जो कथन की स्थिति स्पष्ट करे।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। गद्यांश तने के दिखाई देने और मूल की ओर ध्यान न जाने की तुलना करता है। यह प्रकाशक की अधिक प्रत्यक्ष सामाजिक और आर्थिक उपस्थिति को स्पष्ट करता है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर और शानशौकत सभी प्रमुख नगरों में दिखती हैं, जबकि लेखक को ढूँढने पर ही पाया जा सकता है। कारण गद्यांश की इन्हीं बातों का सार है, इसलिए यह भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध जाँचें भौतिक समृद्धि का आसानी से दिखना ही प्रकाशक की स्थिति को अधिक स्पष्ट बनाता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) में व्याख्या से इनकार अनुचित है। (C) कारण को और (D) कथन को गलत बताते हैं,

जबकि दोनों सही हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सत्य होने पर भी देखें कि कारण कथन के अधिक स्पष्ट दिखने का आधार बताता है या नहीं।

1(iv). गद्यांश के अनुसार 'वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है' – कौन भूमिष्ठ रहता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भूमिष्ठ का अर्थ भूमि के भीतर स्थित होना है।
- मूल का रूपक लेखक के अदृश्य रहते हुए आधार प्रदान करने की भूमिका समझाता है।

चरण 1: सर्वनाम का संदर्भ पहचानें वह शब्द मूल की ओर संकेत करता है और गद्यांश में लेखक को मूल कहा गया है। इसलिए भूमिष्ठ रहने वाला लेखक है। यहाँ शब्द का आशय लेखक के सचमुच भूमि के भीतर रहने से नहीं, बल्कि उसके योगदान के लोगों की दृष्टि से ओझल रहने से है।

चरण 2: कारण स्पष्ट करें पेड़ का तना दिखता है, पर उसकी जड़ भूमि में छिपी रहती है। उसी तरह प्रकाशक की संपन्नता सबको दिखाई देती है, जबकि सृजन का आधार लेखक प्रायः प्रसिद्धि और भौतिक प्रदर्शन से दूर, उपेक्षित रहता है। इसीलिए उसे ढूँढने पर ही पाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक भूमिष्ठ रहता है, क्योंकि मूल की तरह उसका आधारभूत सृजनात्मक योगदान प्रायः लोगों की दृष्टि से छिपा और उपेक्षित रहता है।

त्वरित सुझाव: वह जैसे सर्वनाम का उत्तर देने से पहले उसके ठीक पहले आए रूपक और उसके वास्तविक संदर्भ को जोड़ें।

1(v). लेखक और प्रकाशक दोनों कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं ? किन्हीं दो तर्कों द्वारा पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरकता का अर्थ है कि दोनों की भूमिकाएँ मिलकर एक कार्य को पूर्ण करती हैं।
- गद्यांश में रचना के सृजन और उसके सार्वजनिक प्रसार की परस्पर निर्भरता बताई गई है।

चरण 1: लेखक के लिए प्रकाशक का महत्व लेखक कृति की रचना करता है, किंतु उसे लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत करने का कार्य प्रकाशक करता है। प्रकाशक न हो तो लेखक की कृतियाँ व्यापक पाठक समाज तक कैसे पहुँचेंगी, यह प्रश्न गद्यांश की शुरुआत में उठाया गया है। इस प्रकार प्रकाशक लेखक के सृजन को सार्वजनिक पहुँच प्रदान करके उसकी भूमिका पूर्ण करता है।

चरण 2: प्रकाशक के लिए लेखक का महत्व प्रकाशन के व्यवसाय का आधार लेखक की कृतियाँ हैं। लेखक ही न हो तो प्रकाशित करने योग्य मौलिक रचना कहाँ से आएगी और प्रकाशन व्यवसाय की शुरुआत कैसे होगी? इसीलिए गद्यांश लेखक को मूल तथा प्रकाशक को तना कहता है। मूल के बिना तने का अस्तित्व नहीं और तने के बिना मूल का विस्तार सबके सामने नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष पहला, प्रकाशक लेखक की कृतियाँ पाठकों तक पहुँचाता है। दूसरा, लेखक की कृतियाँ ही प्रकाशक के व्यवसाय का आधार हैं। इसलिए दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

त्वरित सुझाव: दो तर्क माँगे जाएँ तो एक लेखक की निर्भरता और दूसरा प्रकाशक की निर्भरता से लें।

1(vi). लेखक और प्रकाशक के बीच संबंधों में सुधार किस प्रकार आ सकता है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का संदेश परस्पर तनाव के स्थान पर सामंजस्य स्थापित करना है।
- दूरी बढ़ाने वाली बातों के प्रभाव को समझना संबंध सुधारने का आवश्यक आधार है।

चरण 1: पूरकता स्वीकार कर सामंजस्य स्थापित करें लेखक और प्रकाशक दोनों को स्वीकार करना चाहिए कि सृजन तथा प्रकाशन एक-दूसरे पर निर्भर हैं। लेखक कृति का मूल है और प्रकाशक उसका प्रसार करता है। इसलिए अपनी भूमिका को ही सर्वश्रेष्ठ बताने के स्थान पर दोनों को एक-दूसरे के योगदान का सम्मान करना और विषमता से उत्पन्न तनाव दूर करने पर मिलकर विचार करना चाहिए। गद्यांश सामंजस्य की आवश्यकता इसी कारण बताता है।

चरण 2: भड़काने वाले लोगों के प्रभाव से बचें कुछ लोग लेखक को प्रकाशक के विरुद्ध और प्रकाशक को लेखक के विरुद्ध उकसाते हैं। लेखक को शोषण की बात कहकर भड़काया जाता है और प्रकाशक को लेखक की प्रसिद्धि का पूरा श्रेय देकर अहंकार बढ़ाया जाता है। दोनों को ऐसी बातों में आने के बजाय अपने पारस्परिक हित तथा बढ़ते तनाव से होने वाली साझा हानि पर विचार करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संबंधों में सुधार के दो उपाय हैं: एक-दूसरे की पूरक भूमिका स्वीकार कर सामंजस्य स्थापित करना और तनाव बढ़ाने वाले लोगों की बातों से बचकर साझा हित पर विचार करना।

त्वरित सुझाव: उपाय लिखते समय गद्यांश के सामंजस्य वाले कथन और भड़काने वाले लोगों के उदाहरण को आधार बनाएँ।

1(vii). लेखक और प्रकाशक के संबंधों में दूरी बढ़ने के क्या कारण हैं ? इस दूरी के बढ़ने से क्या हानि हो रही है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश संबंधों में तनाव के कारण और उसके परिणाम का स्पष्ट संबंध प्रस्तुत करता है।
- उत्तर में विषमता, बाहरी उकसावे और दोनों की हानि को अलग-अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: दूरी बढ़ने के कारण समझें प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर और शानशौकत सबको दिखाई देती हैं, पर सृजन का आधार लेखक प्रायः उपेक्षित रहता है। इस विषमता से संबंधों में तनाव पैदा होता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग लेखक को कहते हैं कि प्रकाशक उसका शोषण करता है और प्रकाशक को बताते हैं कि लेखक की प्रसिद्धि केवल उसी की देन है। ऐसी बातें दोनों के बीच अविश्वास और दूरी बढ़ाती हैं।

चरण 2: बढ़ती दूरी की हानि स्पष्ट करें लेखक और प्रकाशक मूल तथा तने की तरह परस्पर निर्भर हैं। उनके बीच तनाव बढ़ने से दोनों की हानि होती है और उनकी पूरक भूमिकाओं का सामंजस्य बिगड़ता है। गद्यांश स्पष्ट चेतावनी देता है कि यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। अतः दूरी किसी एक पक्ष के लिए भी लाभकारी नहीं है और उस पर चिंतन करना अनिवार्य है।

चरण 3: निष्कर्ष दूरी का कारण लेखक की उपेक्षा के सामने प्रकाशक की दिखती समृद्धि से उत्पन्न विषमता और लोगों का भड़काना है। बढ़ता तनाव दोनों को हानि पहुँचा रहा है तथा उन्हें चौपट कर सकता है।

त्वरित सुझाव: कारण और परिणाम अलग रखें: विषमता तथा उकसावा कारण हैं, दोनों की हानि परिणाम है।

2. जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम
कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
– उनको प्रणाम !
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार !
– उनको प्रणाम !
जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
– उनको प्रणाम !
एकाकी और अकिंचन हो
जो भू-परिक्रमा को निकले;
हो गए पंगु, प्रति-पद जिनके
इतने अदृष्ट के दाव चले !
– उनको प्रणाम !
कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल
– उनको प्रणाम ! [8 अंक]

2(i). 'रिक्त तूणीर' होने का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अनुभवहीन
(B) विफल
(C) कुंठित
(D) साधनहीन

सही उत्तर: (D) साधनहीन

हल:

अवधारणा:

- तूणीर का अर्थ तीर रखने का तरकश है और रिक्त का अर्थ खाली है।
- काव्य में युद्ध के साधन व्यापक जीवन-संघर्ष के साधनों के प्रतीक हो सकते हैं।

चरण 1: शब्द का संदर्भ पहचानें कवि कहता है कि कुछ वीर रण की समाप्ति से पहले ही 'रिक्त तूणीर' हो गए। अर्थात संघर्ष जारी था, पर उनके तरकश के तीर समाप्त हो चुके थे। यहाँ अभाव उनके साहस का नहीं, संघर्ष के आवश्यक साधनों का है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें अनुभवहीन होने का संबंध अनुभव की कमी से है, जबकि पद्यांश में वीरों का उल्लेख है। विफल होना परिणाम बताता है और कुंठित होना मन की दशा; खाली तरकश का सीधा अर्थ इन दोनों से अलग साधनों का समाप्त हो जाना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः 'रिक्त तूणीर' का अभिप्राय साधनहीन होना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: तूणीर को तरकश से जोड़कर देखें; उसके खाली होने पर योद्धा के साधन समाप्त होते हैं।

2(ii). काव्यांश में 'हिम समाधि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ? [1 अंक]

(A) बर्फीले प्रदेश के कष्टों को झेलना

(B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना

(C) बर्फ जैसी श्वेत समाधि बनाना

(D) बर्फ का ऊँचा शिखर चढ़ना

सही उत्तर: (B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना

हल:

अवधारणा:

- किसी पद का अर्थ उसकी आसपास की पंक्तियों से तय किया जाता है।
- हिम बर्फ को और समाधि यहाँ जीवन के अंत को व्यक्त करती है।

चरण 1: पर्वतारोहण का प्रसंग देखें कवि उत्साह के साथ ऊँचे शिखर की ओर बढ़ने वालों का वर्णन करता है। उनमें कुछ हिम-समाधि ले लेते हैं, जबकि कुछ असफल होकर नीचे लौटते हैं। यह अंतर बताता है कि पहले समूह के लोगों की पर्वत पर मृत्यु हो गई।

चरण 2: विकल्पों का अर्थ जाँचें बर्फीले प्रदेश के कष्ट झेलना मात्र मृत्यु को नहीं बताता। सफेद समाधि बनाने की कोई घटना कविता में नहीं है। ऊँचा शिखर चढ़ना प्रयास की दिशा है, जबकि हिम-समाधि उस प्रयास के दौरान बर्फ के नीचे दबकर जीवन समाप्त होने का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः 'हिम समाधि' का अर्थ बर्फ के नीचे दबकर मर जाना है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: हिम-समाधि के बाद नीचे लौटने वालों का उल्लेख है; इस विरोध से मृत्यु का अर्थ स्पष्ट होता है।

2(iii). 'छोटी-सी नैया' और 'उदधि-पार' का प्रतीकार्थ है – [1 अंक]

(A) छोटी नाव, विशाल सागर

(B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य

(C) कम मेहनत, अधिक सफलता

(D) छोटी नौका, बड़ा जहाज

सही उत्तर: (B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में दिखाई देने वाली वस्तु किसी व्यापक विचार का संकेत करती है।
- छोटी नैया की क्षमता और समुद्र की विशालता का अंतर साधन तथा लक्ष्य का अंतर बताता है।

चरण 1: नैया और समुद्र का संबंध समझें काव्यांश में लोग छोटी-सी नाव लेकर समुद्र पार करने निकलते हैं। नाव का छोटा होना उपलब्ध

साधनों की सीमितता दिखाता है और समुद्र पार करने की आकांक्षा अत्यंत बड़े लक्ष्य को व्यक्त करती है। कवि उनके साहस का सम्मान करता है।

चरण 2: विकल्पों में प्रतीकार्थ चुनें छोटी नाव और विशाल सागर कहना केवल शब्दों का प्रत्यक्ष अर्थ है। कम मेहनत का संकेत नहीं है, क्योंकि समुद्र पार करने में कठिन संघर्ष है। छोटे जहाज और बड़े जहाज की तुलना भी नहीं की गई है। इसलिए सीमित साधनों के साथ विशाल लक्ष्य वाला भाव उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः प्रतीकार्थ सीमित साधन और विशाल लक्ष्य है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर वस्तुओं के नाम दोहराने के बजाय उनके पीछे का जीवन-संदेश पहचानें।

2(iv). कवि किन लोगों को प्रणाम कर रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि का सम्मान केवल सफलता पाने वालों तक सीमित नहीं है।
- प्रयास, साहस, संघर्ष और बलिदान इस कविता के केंद्रीय मूल्य हैं।

चरण 1: आरंभिक घोषणा से पहचानें 'जो नहीं हो सके पूर्ण-काम' से कवि स्पष्ट करता है कि वह उन लोगों को प्रणाम करता है जिनके संकल्प और लक्ष्य पूरे नहीं हो पाए। असफल परिणाम उनके प्रयास का मूल्य कम नहीं करता।

चरण 2: कविता के उदाहरणों से स्पष्ट करें इनमें साधन समाप्त हो जाने पर जूझते वीर, समुद्र पार करते समय डूबने वाले साहसी, शिखर तक पहुँचने में मरने या लौटने वाले पर्वतारोही, बाधाओं से अशक्त हुए यात्री और भुला दिए गए बलिदानी शामिल हैं। सभी ने कठिन परिस्थितियों में बड़ा कार्य करने का प्रयत्न किया।

चरण 3: निष्कर्ष कवि उन संघर्षशील, साहसी और बलिदानी लोगों को प्रणाम कर रहा है जो अपना लक्ष्य पूरा नहीं कर सके और जिन्हें संसार ने भुला दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लक्ष्य की अपूर्णता के साथ उनके साहस और समर्पण का उल्लेख अवश्य करें।

2(v). 'हो गए उसी में निराकार' कथन का क्या तात्पर्य है ? काव्यांश के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय समुद्र पार करने के प्रसंग से स्पष्ट होता है।
- निराकार होना यहाँ शरीर का अस्तित्व मिट जाने और मृत्यु का संकेत है।

चरण 1: पूर्ववर्ती पंक्तियों से संबंध जोड़ें कवि ऐसे साहसियों की बात करता है जो छोटी-सी नैया लेकर विशाल समुद्र को पार करना चाहते थे। उनके साधन कम थे, लेकिन उनकी आकांक्षा बहुत बड़ी थी। 'मन की मन में ही रही' बताता है कि उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई और वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सके।

चरण 2: कथन का आशय स्पष्ट करें 'हो गए उसी में निराकार' का तात्पर्य है कि वे समुद्र पार करने के प्रयत्न में उसी समुद्र में डूब गए और प्राण गँवा बैठे। उनका शरीर जल में विलीन हो गया; जिस समुद्र को वे पार करना चाहते थे, वही उनके जीवन का अंतिम पड़ाव बना। यहाँ निराकार को ध्यान या आध्यात्मिक साधना का अर्थ देना प्रसंग के अनुकूल नहीं होगा।

चरण 3: कवि की श्रद्धा से जोड़ें लक्ष्य अधूरा रहने के बावजूद उनका साहस और संघर्ष व्यर्थ नहीं माना गया है। कवि उन्हें प्रणाम करके सीमित साधनों में बड़े उद्देश्य के लिए जीवन दाँव पर लगाने की भावना का सम्मान करता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस कथन का अर्थ है कि समुद्र पार करने की आकांक्षा लेकर निकले लोग अपना उद्देश्य पूरा करने से पहले ही समुद्र में डूबकर प्राण गँवा बैठे और उसी में विलीन हो गए।

त्वरित सुझाव: 'उसी में' किसके लिए आया है, पहले पहचानें; यहाँ उसका संबंध उदधि अर्थात समुद्र से है।

2(vi). कवि के अनुसार प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करने के बाद भी दुनिया उन लोगों को क्यों भूल गई ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता परिणाम के साथ प्रयत्न और त्याग का मूल्य समझने की प्रेरणा देती है।
- दुनिया का भूलना और कवि का प्रणाम करना दो अलग मूल्य-दृष्टियों को सामने लाता है।

चरण 1: कविता के संकेत पहचानें कवि बताता है कि ये लोग 'कृत-कृत्य नहीं' हो पाए। उनके लक्ष्य अधूरे रह गए; कुछ साधनहीन हुए, कुछ बाधाओं में अशक्त हुए और कुछ ने अपने प्राण तक दे दिए। अंतिम पंक्तियों में बहुत कम समय बीतने पर भी दुनिया के उन्हें भूल जाने की पीड़ा व्यक्त हुई है।

चरण 2: भूलने का निहित कारण समझें काव्यांश से यह भाव निकलता है कि संसार सामान्यतः दिखाई देने वाली सफलता और उपलब्धि को अधिक महत्त्व देता है। जो लक्ष्य तक नहीं पहुँच सके, उनके कठिन संघर्ष, साहस और बलिदान को पर्याप्त पहचान नहीं मिली। इसलिए प्रतिकूल परिस्थितियों में उनका समर्पण भी जनस्मृति में नहीं टिक सका। यह दुनिया की संवेदनहीनता पर कवि की टिप्पणी है।

चरण 3: कवि की प्रतिक्रिया स्पष्ट करें कवि ऐसे लोगों को बार-बार प्रणाम करके इस उपेक्षा का प्रतिकार करता है। उसके लिए असफल होना सम्मान खो देना नहीं है; महान उद्देश्य के लिए ईमानदारी से जूझना भी आदर के योग्य है। वह भूले गए संघर्षशील लोगों की स्मृति को पुनः प्रतिष्ठित करता है।

चरण 4: निष्कर्ष दुनिया ने उन्हें इसलिए भुला दिया कि वह प्रायः सफल परिणामों को महत्त्व देती है और असफल रह गए लोगों के संघर्ष तथा बलिदान की उपेक्षा करती है। कवि उनके त्याग को प्रणाम करके इस उपेक्षा पर प्रश्न उठाता है।

त्वरित सुझाव: दुनिया की सफलता-केंद्रित दृष्टि और कवि की संघर्ष के प्रति श्रद्धा को जोड़कर कारण समझाएँ।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का स्पष्ट परिचय, जीवन से जुड़े उदाहरण और प्रभावी समापन होना चाहिए।
- स्वास्थ्य पर चर्चा में शारीरिक तथा मानसिक, दोनों पक्षों को स्थान देना चाहिए। सुविधा और संतुलन का संबंध इस विषय का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: विषय का केंद्र तय करें लेख का मुख्य विचार है कि आधुनिक सुविधाएँ उपयोगी होते हुए भी असंतुलित दिनचर्या के कारण स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती हैं। आरंभ में वर्तमान जीवन की गति का संकेत दें। फिर देर तक बैठने, अनियमित भोजन और नींद की कमी को उदाहरण बनाकर समस्या स्पष्ट करें। केवल रोगों की सूची देने के बजाय रोज़मर्रा के अनुभव से विचार जोड़ें।

चरण 2: विचारों को क्रम दें पहले सुविधा और व्यस्तता का चित्र प्रस्तुत करें, फिर शरीर और मन पर प्रभाव बताएँ। अंत में छोटे, व्यावहारिक परिवर्तनों से समाधान दें। भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण रखें। लगभग 120 शब्दों के लेख में अनावश्यक आँकड़े, उपशीर्षकों की लंबी सूची और विषय से असंबद्ध बातें न जोड़ें। नीचे शीर्षक के बाद दिया गया अनुच्छेद पूर्ण नमूना लेख है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य**

आज जीवन की रफ्तार बढ़ गई है, पर अपने लिए समय घटता जा रहा है। सुबह की शुरुआत मोबाइल से होती है और रात भी उसी की चमक में बीत जाती है। घंटों बैठे रहना, जल्दी में भोजन करना और नींद टालना हमारी आदत बन चुके हैं। परिणामस्वरूप शरीर थकता है और मन बेचैन रहता है। सुविधाएँ जीवन को सरल बनाती हैं, लेकिन उनका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। थोड़ी पैदल चाल, नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन और पर्याप्त नींद हमें स्वस्थ रख सकते हैं। परिवार के साथ बातचीत तथा प्रकृति का सान्निध्य भी तनाव कम करते हैं। स्वस्थ जीवन किसी महँगी वस्तु का नाम नहीं, रोज़ किए गए छोटे निर्णयों का परिणाम है। आइए, सफलता की दौड़ में अपनी सेहत को भी साथ लेकर चलें।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख आधुनिक दिनचर्या की समस्या, शरीर और मन पर उसके प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान को लगभग 120 शब्दों में जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: पहले अपनी दिनचर्या का एक परिचित दृश्य सोचें, फिर समस्या और छोटे समाधान जोड़कर लगभग 120 शब्दों में लेख पूरा करें।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्यप्रधान रचनात्मक लेख में स्थान, वस्तुओं और व्यक्तियों के व्यवहार से वातावरण सजीव बनाया जाता है।
- विषय के भावात्मक पक्ष को उभारने के लिए दुकान को बच्चों की पढ़ाई, आकांक्षाओं और दैनिक अनुभवों से जोड़ना उपयोगी है।

चरण 1: दृश्य और दृष्टिकोण चुनें स्कूल के बाहर की दुकान को किसी छात्र की परिचित दृष्टि से देखें। घंटी के समय की हलचल, कापियों और रंगों की कतार तथा दुकानदार का व्यवहार दृश्य को जीवंत बना सकते हैं। विषय दुकान का वर्णन है, इसलिए इसे व्यापार बढ़ाने की सलाह या केवल वस्तुओं की सूची में न बदलें।

चरण 2: लेख की रूपरेखा बनाएँ आरंभ में दुकान का स्थान और आकर्षण दिखाएँ। मध्य में बच्चों की भीड़ तथा उनकी अलग-अलग आवश्यकताओं का छोटा दृश्य रखें। अंत में दुकान को सीखने और सपनों से जोड़ते हुए अर्थपूर्ण टिप्पणी दें। वर्णन में संवेदी बिंब और सहज भाषा रखें। शीर्षक के बाद दिया गया निम्न अनुच्छेद लगभग 120 शब्दों का स्वतंत्र नमूना लेख है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान**

स्कूल के फाटक के पास एक छोटी सी स्टेशनरी की दुकान है। उसकी अलमारियों में सजी रंगीन कापियाँ, पेंसिलें और चित्रों वाली फाइलें बच्चों को अपनी ओर खींचती हैं। सुबह वहाँ जल्दी होती है; किसी को पेन चाहिए, किसी को भूली हुई कापी। छुट्टी के समय वही जगह हँसी और बातचीत से भर जाती है। दुकानदार बच्चों की पसंद पहचानता है और मुसकराकर सामान देता है। कभी कोई बच्चा रंगों का डिब्बा देखकर ठिठक जाता है, मानो उसके भीतर पूरा इंद्रधनुष बंद हो। यह दुकान केवल चीजें खरीदने की जगह नहीं है। यहाँ नई कापी के साथ नए संकल्प और रंगों के साथ कल्पनाएँ भी मिलती हैं। स्कूल के बाहर खड़ी यह छोटी सी दुनिया बच्चों के बड़े सपनों की चुपचाप साथी है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख दुकान के दृश्य, बच्चों की चहलपहल और पढ़ाई से उसके भावात्मक संबंध को लगभग 120 शब्दों में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: दुकान की तीन परिचित चीजें और बच्चों की एक छोटी गतिविधि चुनें; अंत में उन्हें पढ़ाई या कल्पना से जोड़ दें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का स्पष्ट परिचय, उदाहरणों सहित विचारों का विकास और सार्थक समापन होना चाहिए।
- शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग का आकलन करते समय सीखने की सुविधा के साथ स्वतंत्र चिंतन, शिक्षक की भूमिका और सूचनाओं की शुद्धता पर भी विचार आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक में शिक्षा तथा ए.आई. के संबंध को स्पष्ट करें। भूमिका में तकनीक के प्रवेश का उल्लेख, मध्य में व्यक्तिगत अभ्यास और शिक्षकों को मिलने वाली सहायता, तथा अंत में विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश रखें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का संबोधन या समापन आवश्यक नहीं है। भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और विषय पर केंद्रित रहे।

चरण 2: विषयवस्तु का संतुलन ऑनलाइन सहायक और तत्काल प्रतिक्रिया जैसे परिचित उदाहरण लेख को ठोस बनाते हैं। ए.आई. की सुविधाएँ बताते हुए तैयार उत्तरों पर निर्भरता का प्रश्न भी उठाएँ। विद्यार्थी की जिज्ञासा और समझ को केंद्र में रखें। लगभग 120 शब्दों की सीमा का पालन करते हुए अनावश्यक तकनीकी विवरण से बचें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण

कभी ज्ञान की खोज पुस्तकालय तक जाती थी, आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसे हमारी उँगलियों तक ले आई है। शिक्षा में ए.आई. का प्रवेश सीखने के नए द्वार खोल रहा है। कठिन प्रश्नों की सरल व्याख्या, तत्काल प्रतिक्रिया और विद्यार्थी की गति के अनुसार अभ्यास इसकी उपयोगी देन हैं। शिक्षक भी पाठयोजना और अभ्यास सामग्री बनाने में इसकी सहायता ले सकते हैं। किंतु हर चमकता उत्तर सही नहीं होता। बिना जाँचे उत्तर स्वीकार करना और तैयार सामग्री उतारना मौलिक सोच को कमजोर कर सकता है। इसलिए तकनीक के साथ विवेक भी आवश्यक है। शिक्षक का मानवीय मार्गदर्शन और विद्यार्थी की जिज्ञासा शिक्षा के केंद्र में रहें। ए.आई. सहायक बने, हमारी समझ का विकल्प नहीं। तभी उसके बढ़ते चरण शिक्षा को बेहतर बनाएँगे।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में ए.आई. की शैक्षिक उपयोगिता, उससे जुड़ी सावधानियाँ और मानवीय मार्गदर्शन की आवश्यकता को लगभग 120 शब्दों में संगठित किया गया है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के बाद सुविधा, सावधानी और समाधान का क्रम अपनाएँ; उदाहरण दें, पर लेख को तकनीकी परिभाषाओं की सूची न बनाएँ।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

अखबार या पत्रिका के प्रकाशन के संदर्भ में 'डेडलाइन' से क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचारपत्र या पत्रिका का प्रकाशन निश्चित समयसारिणी के अनुसार होता है। समाचार संकलन, संपादन और मुद्रण के बीच समय का समन्वय आवश्यक है।
- डेडलाइन सामग्री स्वीकार करने की निर्धारित अंतिम समयसीमा है; इसका संबंध समाचार की विषयवस्तु से नहीं, प्रकाशन की समयबद्ध प्रक्रिया से है।

चरण 1: अर्थ और उद्देश्य समझें डेडलाइन का शाब्दिक आशय अंतिम समयसीमा है। किसी अंक के लिए समाचार या लेख तय समय तक संपादकीय विभाग को मिलने चाहिए, ताकि चयन, संपादन, पृष्ठसज्जा और छपाई पूरी की जा सके। इसे केवल अखबार बाँटने का समय बताना अधूरा होगा; मुख्य बात प्रकाशन हेतु सामग्री पहुँचने की अंतिम सीमा है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर अखबार या पत्रिका के किसी अंक में प्रकाशन हेतु समाचार, लेख आदि सामग्री स्वीकार करने की निर्धारित अंतिम समयसीमा डेडलाइन कहलाती है। इसके पालन से संपादन, पृष्ठसज्जा और मुद्रण समय पर पूरे होते हैं तथा अंक नियत समय पर प्रकाशित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः डेडलाइन प्रकाशन के लिए सामग्री प्राप्त करने की निर्धारित अंतिम समयसीमा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अंतिम समयसीमा के साथ उसका उद्देश्य भी जोड़ें: संपादन और मुद्रण पूरा करके अंक समय पर प्रकाशित करना।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
ड्राई एंकर किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर सूचना प्रस्तुत करता है; उसके साथ दृश्य, संवाददाता की रिपोर्ट या ध्वनि का प्रयोग अलग-अलग प्रस्तुति रूप बनाता है।
- ड्राई एंकर में समाचार केवल एंकर द्वारा पढ़ा जाता है। उसके साथ संबंधित घटनास्थल के दृश्य या संवाददाता की रिपोर्ट नहीं दिखाई जाती।

चरण 1: प्रस्तुति की पहचान इस शब्द का संबंध एंकर के व्यक्तित्व या आवाज के प्रभाव से नहीं है। पहचान यह है कि दर्शक एंकर को समाचार पढ़ते देखते हैं, पर घटना का दृश्य विवरण या अलग रिपोर्ट साथ नहीं चलता। ऐसी प्रस्तुति में सूचना का आधार एंकर का कथन होता है। दृश्य उपलब्ध न होने पर भी समाचार इस प्रकार दिया जा सकता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर टेलीविजन समाचार की वह प्रस्तुति ड्राई एंकर कहलाती है, जिसमें एंकर केवल समाचार पढ़कर सूचना देता है। उसके साथ घटनास्थल के दृश्य या संवाददाता की रिपोर्ट नहीं दिखाई जाती। दर्शकों तक समाचार की जानकारी मुख्यतः एंकर के कथन से पहुँचती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः संबंधित दृश्य या संवाददाता की रिपोर्ट के बिना एंकर द्वारा समाचार पढ़ना ड्राई एंकर है।

त्वरित सुझाव: ड्राई एंकर की पहचान में दो बातें साथ लिखें: एंकर समाचार पढ़ता है और संबंधित दृश्य या संवाददाता की रिपोर्ट साथ नहीं चलती।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'हिन्दी वेब पत्रकारिता अभी शैशवकाल में है' – कैसे ? उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न अभिव्यक्ति और माध्यम में पत्रकारिता की प्रकृति तथा उसकी कार्यप्रणाली की समझ पर आधारित है।
- उत्तर में मुख्य कारणों अथवा प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए लगभग 40 शब्दों में संक्षिप्त अभिव्यक्ति देनी चाहिए।

चरण 1: वेब पत्रकारिता की स्थिति समझें यह प्रश्न पाठ्यपुस्तक में वर्णित हिंदी वेब पत्रकारिता के आरंभिक विकास की स्थिति का कारण पूछता है। उत्तर में केवल उसके कम विकसित होने की बात कहना पर्याप्त नहीं है; तकनीकी और आर्थिक बाधाएँ भी बतानी चाहिए।

चरण 2: विकास में बाधाएँ पहचानें इंटरनेट पर हिंदी के अलग-अलग फ़ॉन्ट और तकनीकी मानकों की समस्या से सामग्री पढ़ने और खोजने में कठिनाई आती थी। नियमित मौलिक सामग्री, प्रशिक्षित पत्रकारों तथा पर्याप्त आय और विज्ञापन का अभाव भी इसके विस्तार में बाधक था। यहाँ शैशवकाल का आशय विकास के आरंभिक चरण से है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी वेब पत्रकारिता विकास के प्रारंभिक चरण में है। फ़ॉन्ट और तकनीकी एकरूपता की कमी, सीमित पाठक-वर्ग तथा विज्ञापन-आय का अभाव इसकी बाधाएँ हैं। पर्याप्त मौलिक सामग्री और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी के कारण इसका स्वतंत्र स्वरूप अभी विकसित हो रहा है।

त्वरित सुझाव: शैशवकाल समझाते समय आरंभिक विकास के साथ तकनीकी और आर्थिक बाधाएँ अवश्य जोड़ें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
विशेष रिपोर्ट कैसे तैयार की जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न अभिव्यक्ति और माध्यम में पत्रकारिता की प्रकृति तथा उसकी कार्यप्रणाली की समझ पर आधारित है।
- उत्तर में मुख्य कारणों अथवा प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए लगभग 40 शब्दों में संक्षिप्त अभिव्यक्ति देनी चाहिए।

चरण 1: रिपोर्ट का उद्देश्य समझें विशेष रिपोर्ट किसी घटना या समस्या के सामान्य समाचार से आगे जाकर उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों की पड़ताल करती है। इसे तैयार करने के लिए विषय की गहरी जानकारी और प्रमाणित तथ्यों की आवश्यकता होती है। केवल घटना का संक्षिप्त विवरण विशेष रिपोर्ट नहीं बन जाता।

चरण 2: सामग्री जुटाने और लिखने की प्रक्रिया समझें रिपोर्टर दस्तावेजों तथा विभिन्न स्रोतों से जानकारी जुटाता है, संबंधित लोगों और विशेषज्ञों के साक्षात्कार लेता है तथा स्थल का निरीक्षण करता है। इसके बाद तथ्यों की पुष्टि और विश्लेषण करके उन्हें तार्किक क्रम में रखता है। निष्पक्षता और प्रामाणिकता पूरी प्रक्रिया का आधार हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष रिपोर्ट तैयार करने के लिए विषय का गहन अध्ययन कर दस्तावेजों, प्रत्यक्ष निरीक्षण तथा संबंधित व्यक्तियों और विशेषज्ञों के साक्षात्कार से तथ्य जुटाए जाते हैं। उनकी पुष्टि और विश्लेषण के बाद पृष्ठभूमि, कारण एवं प्रभावों सहित निष्पक्ष, सुव्यवस्थित रिपोर्ट लिखी जाती है।

त्वरित सुझाव: विशेष रिपोर्ट की प्रक्रिया को अध्ययन, तथ्य-संग्रह, सत्यापन और विश्लेषण के क्रम में लिखें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेषज्ञता कैसे प्राप्त की जा सकती है ? स्पष्ट कीजिये। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न अभिव्यक्ति और माध्यम में पत्रकारिता की प्रकृति तथा उसकी कार्यप्रणाली की समझ पर आधारित है।
- उत्तर में मुख्य कारणों अथवा प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए लगभग 40 शब्दों में संक्षिप्त अभिव्यक्ति देनी चाहिए।

चरण 1: विशेषज्ञता का आधार पहचानें पत्रकारिता में विशेषज्ञता का अर्थ किसी एक क्षेत्र की घटनाओं, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और शब्दावली की गहरी समझ विकसित करना है। राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान या खेल जैसे क्षेत्र का चुनाव करके उसका नियमित अध्ययन करना इसका आधार है। केवल समाचारों की सामान्य जानकारी विशेषज्ञता नहीं है।

चरण 2: अध्ययन को व्यावहारिक अनुभव से जोड़ें पत्रकार संबंधित क्षेत्र की पुस्तकों, शोध, प्रामाणिक दस्तावेजों और नवीन घटनाओं का अध्ययन करता है। विशेषज्ञों तथा विश्वसनीय सूत्रों से नियमित संपर्क और उसी क्षेत्र की लगातार रिपोर्टिंग उसकी समझ बढ़ाते हैं। अनुभव के साथ वह तथ्यों का संदर्भ समझकर स्वतंत्र और तथ्यपूर्ण विश्लेषण कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता में विशेषज्ञता के लिए चुने हुए विषय का गहन अध्ययन, उसकी शब्दावली की समझ और नवीन घटनाओं की नियमित जानकारी आवश्यक है। विशेषज्ञों व विश्वसनीय सूत्रों से संपर्क तथा निरंतर रिपोर्टिंग के व्यावहारिक अनुभव से विषयगत समझ और विश्लेषण-क्षमता विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: विशेषज्ञता के उत्तर में विषय का अध्ययन, विशेषज्ञों से संपर्क और निरंतर रिपोर्टिंग तीनों शामिल करें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

"परंपरागत विषयों के बजाए नए विषयों पर लिखने का अभ्यास करने से अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का पूरा लाभ मिलता है।" – कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय लेखक को पूर्वनिर्धारित विचारों से आगे बढ़कर स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर देते हैं।
- अनुभव, निरीक्षण और कल्पना के आधार पर विषय को अपना विशिष्ट रूप देना रचनात्मक लेखन की विशेषता है।

चरण 1: कथन का आशय समझिए प्रश्न में अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का संबंध अपने विचार स्वतंत्र ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता से है। परंपरागत विषयों पर लेखक प्राय: पहले से पढ़े हुए तर्क, उदाहरण और निष्कर्ष दोहराने लगता है। नए विषय इस तैयार ढाँचे को तोड़ते हैं और लेखक से स्वयं सोचने की माँग करते हैं।

चरण 2: मौलिकता का आधार पहचानिए किसी सामान्य वस्तु या घटना में नया पक्ष खोजने के लिए लेखक अपने परिवेश को ध्यान से देखता है। वह विषय के साथ अपने सुख-दुख, स्मृतियाँ और प्रश्न जोड़ सकता है। इस अभ्यास में एक ही विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण संभव होते हैं। इसलिए अपनी अनुभूति के अनुरूप शब्द, शैली और उदाहरण चुनना आवश्यक है; केवल चौंकाने वाली बातें लिखना मौलिकता नहीं है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर परंपरागत विषयों पर लिखते समय हम प्राय: रटे हुए विचारों और प्रचलित निष्कर्षों को दोहराते हैं। नए विषयों पर लिखने का अभ्यास हमें स्वतंत्र चिंतन, सूक्ष्म निरीक्षण और कल्पना के प्रयोग का अवसर देता है। हम अपने अनुभवों, संवेदनाओं और दृष्टिकोण को बिना किसी तय साँचे के व्यक्त करते हैं। इससे भाषा में ताजगी, विचारों में मौलिकता और अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास आता है। इस प्रकार हम दूसरों की बात दुहराने के बजाय अपनी विशिष्ट बात कहकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूरा लाभ उठाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष नए विषय पर स्वतंत्र दृष्टि और अपनी भाषा में लिखना ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का रचनात्मक उपयोग है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में रटंत लेखन के स्थान पर स्वतंत्र चिंतन, निजी अनुभव और मौलिक भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय नाटक के संवादों की विशेषताएँ लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में संवाद पात्रों के स्वभाव, संबंध और संघर्ष को सामने लाते हैं तथा कथानक को आगे बढ़ाते हैं।
- कहानी के वर्णन को मंच पर अभिनय योग्य संवादों और क्रियाओं में बदलना नाट्य रूपांतरण का प्रमुख कार्य है।

चरण 1: कहानी और नाटक का अंतर समझिए कहानी में कथावाचक वातावरण, मन:स्थिति और घटनाएँ बता सकता है, जबकि नाटक में दर्शक इन्हें पात्रों के कथन, अभिनय और मंचीय क्रिया से जानता है। इसलिए कथावाचक के लंबे विवरण को ज्यों का त्यों संवाद बना देना उचित नहीं है। संवाद से पात्रों की तत्काल स्थिति और उनके आपसी संबंध स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 2: संवादों की मंचीय कसौटी पहचानिए नाटकीय संवाद बोलने और सुनने के लिए होते हैं। उनका उच्चारण सहज हो, लंबाई परिस्थिति के अनुकूल हो और प्रत्येक कथन दूसरे पात्र की प्रतिक्रिया को अवसर दे। पात्र की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति और भावावस्था के अनुरूप भाषा चुनने से उसकी विशिष्ट पहचान बनती है। अनावश्यक विस्तार के स्थान पर सार्थक कथन और उपयुक्त विराम प्रभाव बढ़ाते हैं।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद संक्षिप्त, सहज, स्वाभाविक और बोलचाल के निकट होने चाहिए। उनकी भाषा पात्र की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति और स्वभाव के अनुकूल हो। संवादों से पात्रों की भावनाएँ, आपसी संबंध और संघर्ष उभरें तथा कथानक आगे बढ़े। वे प्रसंगानुकूल, प्रभावपूर्ण और अभिनय योग्य हों। कहानी के लंबे विवरण को संवादों

में ज्यों का त्यों न रखा जाए। संवाद पात्रों की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं से जुड़े हों तथा दर्शकों की उत्सुकता बनाए रखें। अनावश्यक भाषण और दोहराव से बचना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सफल नाटकीय संवाद पात्रानुकूल भाषा में कथानक और संघर्ष को मंच पर जीवंत करते हैं।

त्वरित सुझाव: विशेषताएँ लिखते समय संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, पात्रानुकूलता और कथानक को आगे बढ़ाने की भूमिका अवश्य जोड़िए।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक की अवधि छोटी तथा पात्र संख्या कम क्यों होती है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; दृश्य, वेशभूषा और हावभाव के स्थान पर संवाद तथा ध्वनि प्रभाव कथा को स्पष्ट करते हैं।
- अवधि और पात्रों का चयन श्रोता की एकाग्रता तथा आवाजों के आधार पर पहचान करने की सुविधा के अनुसार होता है।

चरण 1: उत्तर का आधार पहले रेडियो की केवल सुनकर समझने की प्रकृति बताएँ। फिर अवधि को ध्यान बनाए रखने से और पात्र संख्या को आवाज पहचानने से जोड़ें। दोनों कारणों को लगभग 80 शब्दों के एक सुसंगत उत्तर में रखें।

चरण 2: कारणों का विस्तार समझें रेडियो सुनते समय श्रोता को पात्रों के चेहरे, स्थान या क्रियाएँ दिखाई नहीं देतीं। उसे संवाद सुनकर ही घटनाक्रम की मानसिक छवि बनानी पड़ती है। इसलिए कथानक को अनावश्यक प्रसंगों से बचाकर संक्षिप्त रखा जाता है। इससे कथा की गति और नाटकीय प्रभाव बना रहता है। इसी तरह हर नया पात्र एक नई आवाज तथा नए संबंध की पहचान माँगता है। अत्यधिक आवाजें आने पर श्रोता भूल सकता है कि कौन किससे बात कर रहा है। कम पात्र और विशिष्ट आवाजें संवादों का अर्थ आसानी से ग्रहण करने में सहायता करती हैं।

चरण 3: मॉडल उत्तर रेडियो नाटक केवल सुनने का माध्यम है; इसमें दृश्य दिखाई नहीं देते। इसलिए उसकी अवधि छोटी रखी जाती है, ताकि श्रोता की एकाग्रता बनी रहे और वह कथा से जुड़ा रह सके। लंबी अवधि में उसका ध्यान भटक सकता है। पात्रों की संख्या भी कम होती है, क्योंकि श्रोता उन्हें केवल आवाज और संवाद से पहचानता है। अधिक पात्र होने पर आवाजों तथा संबंधों में भ्रम पैदा हो सकता है। सीमित पात्र कथा और घटनाओं को स्पष्ट बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक की छोटी अवधि श्रोता का ध्यान बनाए रखती है और कम पात्र श्रव्य पहचान तथा कथा की स्पष्टता सुनिश्चित करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों कारण अलग-अलग स्पष्ट करें: छोटी अवधि का संबंध एकाग्रता से और कम पात्रों का संबंध आवाज पहचानने से है।

---

6. तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया –
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया –
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल ! [5 अंक]

6(i). पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता है ? [1 अंक]

(A) बादलों के गरजने का
(B) बिजली के कड़कने का
(C) पृथ्वी की आशाओं का
(D) झरनों के गिरने का

सही उत्तर: (A) बादलों के गरजने का

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर काव्यांश में बताई गई क्रिया और उसके कारण को मिलाकर मिलता है।
- 'भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर' में गर्जना अंकुरों के जागरण का कारण है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पढ़ें कवि कहता है कि घन के भेरी जैसे गर्जन से पृथ्वी के भीतर सोए हुए अंकुर सजग हो उठते हैं। वे नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करके बादल की ओर देखते हैं। इसलिए प्रभाव बादलों के गरजने का पड़ता है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें बिजली के कड़कने और झरनों के गिरने को अंकुरों के सजग होने का कारण नहीं बताया गया है। पृथ्वी की आशाओं का उल्लेख नवजीवन की आकांक्षा से जुड़ा है; जागरण का प्रत्यक्ष कारण गर्जन है। इसलिए (B), (C) और (D) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : बादलों के गरजने का।

त्वरित सुझाव: काव्यांश में 'से सजग' से ठीक पहले आने वाले शब्दों को देखें; वहीं जागरण का कारण मिलता है।

6(ii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि बादलों के विप्लवकारी रूप का आह्वान क्यों कर रहा है ? [1 अंक]

(A) वातावरण को ठंडक देने के लिए

(B) क्रांति लाने के लिए

(C) वर्षा करने के लिए

(D) बादलों को देखने के लिए

सही उत्तर: (B) क्रांति लाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है।
- 'विप्लव', 'रण-तरी' और 'भेरी-गर्जन' संघर्ष तथा जागरण का भाव बनाते हैं।

चरण 1: आह्वान का उद्देश्य पहचानें कवि बादल को 'ऐ विप्लव के बादल' कहता है। विप्लव का अर्थ क्रांतिकारी परिवर्तन है। दग्ध हृदय और नवजीवन की आशा का उल्लेख बताता है कि कवि पीड़ित जीवन में परिवर्तन लाने वाली शक्ति को बुला रहा है।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन करें वातावरण को ठंडा करना और वर्षा करना बादल के सामान्य प्राकृतिक कार्य हो सकते हैं, पर यहाँ प्रश्न उसके विप्लवकारी रूप के उद्देश्य पर है। केवल बादल देखना भी संघर्ष और नवजीवन की आकांक्षा को व्यक्त नहीं करता। इसलिए (A), (C) और (D) के स्थान पर क्रांति लाने वाला आशय उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : क्रांति लाने के लिए।

त्वरित सुझाव: बादल के प्रतीक का अर्थ तय करते समय 'विप्लव', 'रण' और 'नवजीवन' जैसे शब्द साथ पढ़ें।

6(iii). 'सुप्त अंकुर' का प्रयोग किस भावना/प्रक्रिया को प्रकट करता है ? [1 अंक]

(A) आलस्य और निराशा

(B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

(C) बीज के समाप्त होने की प्रक्रिया

(D) अंकुरित बीज के न बढ़ने की प्रक्रिया

सही उत्तर: (B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में किसी दृश्य वस्तु से व्यापक मानवीय भाव व्यक्त होता है।
- अंकुर में भावी विकास की शक्ति है; उसका सुप्त होना उस शक्ति का अभी निष्क्रिय होना बताता है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ निकालें सुप्त अंकुर बादल के गर्जन से सजग होते हैं और नवजीवन की आशा में सिर उठाते हैं। अतः उनमें जीवन की क्षमता पहले से विद्यमान है, जो अनुकूल प्रेरणा पाकर जाग रही है। यह सोई हुई आशाओं और संभावनाओं का बिंब है।

चरण 2: गलत विकल्प हटाएँ आलस्य और निराशा को अंतिम भाव मानना उचित नहीं, क्योंकि अंकुर सजग होकर आशापूर्वक देखते हैं। बीज के समाप्त होने की बात नहीं है। अंकुरित बीज के न बढ़ने का अर्थ भी नवजीवन की ओर उन्मुख इस चित्र से मेल नहीं खाता। इसलिए (A), (C) और (D) असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ।

त्वरित सुझाव: 'सुप्त' को अकेले निराशा न समझें; अगली क्रिया 'सजग' और नवजीवन की आशा उसके प्रतीकार्थ को खोलती है।

6(iv). 'प्लावित माया' को किस संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है ? [1 अंक]

(A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में

(B) जल प्रलय के वर्णन के रूप में

(C) वर्षा के कारण आप्लावित नदी के रूप में

(D) शोषण रूपी अग्नि के रूप में

सही उत्तर: (A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सुख की अस्थिरता और विप्लव का संबंध समझकर प्रतीक का आशय तय करना चाहिए।
- माया का संबंध यहाँ धन-वैभव से है; क्रांतिकारी परिवर्तन के सामने वह स्थायी सुरक्षा नहीं देता।

चरण 1: माया का संदर्भ समझें 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' और 'निर्दय विप्लव' की पृष्ठभूमि में माया धन-संपत्ति तथा वैभव का संकेत करती है। क्रांति के व्यापक प्रभाव में यह संपत्ति भी सुरक्षित और स्थायी नहीं रहती। दिए गए विकल्पों में शोषक वर्ग की धन-संपत्ति इसी संदर्भ को व्यक्त करती है।

चरण 2: अन्य अर्थों की जाँच करें जल प्रलय और आप्लावित नदी वाले विकल्प केवल जल के बाहरी दृश्य पर टिके हैं; वे माया के धन-वैभव वाले आशय को नहीं पकड़ते। शोषण रूपी अग्नि भी माया का अर्थ नहीं है। इसलिए (B), (C) तथा (D) इस संदर्भ में सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में।

त्वरित सुझाव: 'प्लावित' पढ़कर केवल बाढ़ न चुनें; साथ के 'माया', 'अस्थिर सुख' और 'विप्लव' का संबंध समझें।

6(v). 'घन, भेरी-गर्जन' से कवि ने किसका बोध कराया है ? [1 अंक]

(A) आकाश में बादलों का मधुर संगीत

(B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

(C) समुद्र की लहरों का संगीत

(D) युद्ध में बजने वाले नगाड़ों की आवाज

सही उत्तर: (B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

हल:

अवधारणा:

- भेरी युद्ध के अवसर पर बजने वाला नगाड़ा है; उसकी ध्वनि संघर्ष का आह्वान करती है।
- काव्यांश में बादल की गर्जना को भेरी से जोड़कर क्रांतिकारी जागरण का भाव व्यक्त किया गया है।

चरण 1: ध्वनि-बिंब का आशय पहचानें घन की गर्जना सुनकर सुप्त अंकुर सजग होते हैं और नवजीवन की आशा में सिर उठाते हैं। 'रण-तरी' और 'विप्लव' के साथ भेरी का उल्लेख गर्जना को संघर्ष तथा क्रांति की प्रेरक पुकार बनाता है।

चरण 2: निकट विकल्प में अंतर करें (D) भेरी का केवल शाब्दिक परिचय देता है कि वह युद्ध का नगाड़ा है। प्रश्न कवि द्वारा कराए गए बोध का है, इसलिए (B) अधिक पूर्ण है। मधुर संगीत और समुद्र की लहरों का संगीत इस उग्र, जागरणकारी ध्वनि को व्यक्त नहीं करते; अतः (A) तथा (C) भी गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना।

त्वरित सुझाव: भेरी का शब्दार्थ और कवि का अभिप्राय अलग पहचानें; यहाँ सजग करते अंकुर क्रांति की प्रेरणा का संकेत देते हैं।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"कविता एक खेल है बच्चों के बहाने" – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चों का खेल रचनात्मक स्वतंत्रता और कल्पना की असीम संभावनाओं का प्रतीक है। कविता भी मनुष्य को संकीर्ण सीमाओं से बाहर ले जाती है।
- तुलना का आधार बच्चों और कविता की सहजता, आनंद तथा सबको अपनाने की क्षमता है। यहाँ खेल का अर्थ कविता को निरर्थक बताना नहीं है।

चरण 1: बच्चों के खेल का संकेत समझना बच्चे खेलते समय अपने और पराए घर का भेद भुला देते हैं। उनकी कल्पना किसी एक घर, पहचान अथवा सामाजिक दायरे में बँधी नहीं रहती। कवि इसी स्वच्छंदता को कविता की प्रकृति से जोड़ता है। दोनों में नए संबंध और नई संभावनाएँ बनाने का सहज उत्साह है।

चरण 2: कविता से संबंध जोड़ना कविता भाषा और कल्पना के सहारे अलग-अलग लोगों के अनुभवों को अपना लेती है। वह किसी एक व्यक्ति या समुदाय की सीमा में बंद नहीं रहती। बच्चों का भेदरहित मिलना कविता की व्यापक मानवीय आत्मीयता को समझाता है। उत्तर में इसी समानता को प्रमुख रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने कविता को बच्चों के बहाने एक खेल कहा है, क्योंकि बच्चों की तरह कविता भी सहज, कल्पनाशील और बंधनमुक्त होती है। बच्चे खेलते हुए अपने-पराए घर का अंतर मिटा देते हैं। उसी प्रकार कविता संकीर्ण सीमाएँ लाँघकर सबके अनुभवों को अपनाती है। दोनों में आनंद, रचनात्मकता और सबको एक करने की असीम संभावना रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों के खेल और कविता में कल्पना की स्वतंत्रता तथा अपने-पराए का भेद मिटाने की समानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चों के खेल की सहजता को कविता की असीमता और मानवीय एकता से अवश्य जोड़ें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'व्यावसायिक दबाव के अंतर्गत एक व्यक्ति की संवेदनशीलता का प्रकटीकरण है।' स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में दूरदर्शन के साक्षात्कार के माध्यम से मीडिया की व्यावसायिक मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है।
- व्यक्ति की पीड़ा को समझने और उसे दर्शकों के लिए भावुक प्रदर्शन बनाने में अंतर है। कविता में करुणा के दावे और व्यवहार की संवेदनहीनता का विरोध उभरता है।

चरण 1: साक्षात्कारकर्ता का व्यवहार देखना कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति से उसकी पीड़ा के बारे में बार-बार प्रश्न करता है। उसका आग्रह उस व्यक्ति को सहजता से अपनी बात कहने देने पर नहीं, बल्कि उससे ऐसा दुःख प्रकट करवाने पर है जो कैमरे के लिए प्रभावशाली दृश्य बन सके। इस दबाव में व्यक्ति की गरिमा पीछे छूट जाती है।

चरण 2: व्यावसायिक दबाव का प्रभाव स्पष्ट करना कार्यक्रम को रोचक और भावुक बनाने की इच्छा वास्तविक सहानुभूति पर हावी हो जाती है। संचालक अपाहिज के साथ दर्शकों को भी रुलाना चाहता है। उसकी कथित संवेदनशीलता अंततः प्रदर्शन बन जाती है। प्रश्न के कथन को स्पष्ट करते समय इस व्यंग्य को पहचानना चाहिए, केवल करुणा का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को समझने के बजाय उसे कैमरे पर प्रदर्शित करना चाहता है। वह बार-बार प्रश्न करके उसे रुलाने और दर्शकों को भावुक बनाने का प्रयास करता है। कार्यक्रम की सफलता का व्यावसायिक दबाव मानवीय गरिमा पर भारी पड़ता है। इस प्रकार कथित संवेदनशीलता के पीछे छिपी संवेदनहीनता और करुणा के व्यापार का व्यंग्यात्मक उद्घाटन होता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता व्यावसायिक सफलता के लिए मनुष्य की पीड़ा के प्रदर्शन और संवेदना के क्षरण को उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: संचालक की कथित करुणा और अपाहिज व्यक्ति पर डाले गए भावनात्मक दबाव का अंतर दिखाएँ।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
"माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।" 'कवितावली' की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की उक्त पंक्ति में रामभक्ति से उत्पन्न संतोष, स्वाभिमान और सांसारिक निर्लिप्तता का भाव है।
- पंक्ति में भोजन और आश्रय की न्यूनतम आवश्यकताओं का उल्लेख है। लेने-देने से दूरी का आशय सांसारिक स्वार्थ, ऋण और बंधनों से मुक्त रहना है।

चरण 1: पंक्ति के शब्दों का आशय खोलना माँगकर खाने का अर्थ अल्प साधनों में अपना जीवन निर्वाह कर लेना है। मस्जिद में सोने का कथन बताता है कि कवि आश्रय को लेकर आग्रह नहीं करता। उसे आराम, प्रतिष्ठा या किसी विशिष्ट स्थान की आवश्यकता नहीं है। वह जीवन की साधारण आवश्यकताओं तक सीमित रहकर संतुष्ट है।

चरण 2: कवि का जीवन-दृष्टिकोण समझना न किसी से एक लेना और न दो देना सांसारिक लेन-देन तथा उससे बनने वाले स्वार्थपूर्ण संबंधों से दूरी को व्यक्त करता है। कवि को समाज की निंदा या जातिगत प्रतिष्ठा की चिंता नहीं है। राम का भक्त होने के कारण उसकी पहचान और संतोष भक्ति में निहित हैं। मस्जिद के उल्लेख से आश्रय संबंधी निर्बंधता भी व्यक्त होती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास कहते हैं कि वे माँगकर भोजन कर लेंगे और मस्जिद में सोकर जीवन बिता लेंगे। उन्हें सांसारिक सुख-सुविधाओं, जातिगत प्रतिष्ठा या लोगों की निंदा की चिंता नहीं है। न किसी से कुछ लेना है, न किसी को कुछ देकर संबंधों में बँधना है। रामभक्ति में संतुष्ट कवि का यह कथन स्वाभिमान, सादगी और सांसारिक मोह से मुक्त जीवन का परिचायक है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं में संतोष और रामभक्ति के आधार पर सांसारिक बंधनों से मुक्त जीवन का संदेश देती है।

त्वरित सुझाव: माँगकर खाने, मस्जिद में सोने और लेन-देन से दूरी—तीनों को संतोष तथा निर्लिप्तता से जोड़ें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
त्यौहार किस प्रकार हमारे मन को उत्साह व प्रफुल्लता से भर देते हैं ? 'रुबाइयाँ' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाइयों में घरेलू जीवन, त्योहारों और पारिवारिक संबंधों का आत्मीय सौंदर्य उभरता है।
- दीवाली और रक्षाबंधन के प्रसंग उत्सव के बाहरी रंगों को स्नेह, आशा और पारिवारिक उल्लास से जोड़ते हैं।

चरण 1: कविता के उत्सव-प्रसंग पहचानना दीवाली पर घर की सजावट, मिठाई और जगमगाते दीप वातावरण में आनंद भरते हैं। माँ का बच्चे के घरौंदे में दीप जलाना उत्सव को बालमन की प्रसन्नता से जोड़ता है। रक्षाबंधन पर बहन का प्रेम और राखी की चमक भाई-बहन के आत्मीय संबंध को उजागर करते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर त्योहार घरों की सजावट, दीपों के प्रकाश और आत्मीय संबंधों से मन को उल्लास देते हैं। रुबाइयों में दीवाली पर बच्चे के घरौंदे में दीप जलाती माँ और रक्षाबंधन पर स्नेह से राखी बाँधती बहन पारिवारिक प्रेम तथा प्रसन्नता को साकार करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष त्योहार सौंदर्य और पारिवारिक स्नेह के मेल से जीवन में उत्साह तथा प्रफुल्लता लाते हैं।

त्वरित सुझाव: दीवाली के दीप और रक्षाबंधन के स्नेह—इन दो ठोस प्रसंगों से उत्तर को कविता से जोड़ें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो'
पंक्तियों के संदर्भ में लिखिए कि कवि ने 'उषा' को किस रूप में चित्रित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में उषाकाल के बदलते रंग मूर्त दृश्य-बिंब बनकर आते हैं।
- नील जल और गौर देह का बिंब प्रभात की नीली पृष्ठभूमि पर उभरते उजले प्रकाश को सजीव करता है।

चरण 1: बिंब का अर्थ समझें नील जल नीले आकाश की अनुभूति कराता है और गौर झिलमिल देह उसमें उभरती उजली आभा को मूर्त करती है। कवि ने रंगों और हलचल के सहारे अमूर्त उषा को ऐसी आकृति दी है जिसे पाठक आँखों के सामने अनुभव कर सकता है। झिलमिलाहट प्रकाश की चंचलता और कोमलता दोनों उभारती है। यहाँ रंग और गति मिलकर प्रभात के सौंदर्य को स्पर्शनीय अनुभव देते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने उषा को नीले जल में हिलती हुई किसी सुंदर, गोरी देह के रूप में चित्रित किया है। नीला आकाश जल जैसा और उसमें झिलमिलाता प्रातःकालीन उजाला गौर देह जैसा लगता है। इससे उषा का सौंदर्य सजीव हो उठा है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में उषा का चित्र नीले जल में झिलमिलाती गौर देह के सौंदर्य-बिंब के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है।

त्वरित सुझाव: नील जल को आकाश और गौर देह को प्रातःकालीन उजाले से जोड़कर बिंब का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

"बीज गल गया नि:शेष" से कवि का क्या तात्पर्य है ? कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की इस कविता में कागज का पन्ना खेत और विचार रूपी बीज रचना के उद्गम का प्रतीक है।
- बीज का गलना विचार के स्वतंत्र रूप के मिटकर कल्पना, शब्द और भाव में विकसित होने की प्रक्रिया है।

चरण 1: रूपक का आशय समझें खेत में बोया बीज अपना मूल आकार खोकर पौधे में बदल जाता है। उसी प्रकार कवि के मन में आया विचार कल्पना से विकसित होकर शब्दों, भावों और रचना का रूप लेता है। आरंभिक विचार अलग से दिखाई नहीं देता, किंतु उसका सृजनात्मक परिणाम कविता में रहता है। इसलिए बीज का गलना सृजन की समाप्ति नहीं, नए रूप में उसके विस्तार का सूचक है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर 'बीज गल गया नि:शेष' का अर्थ है कि मूल विचार कल्पना में पूरी तरह समाकर कविता में बदल गया। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि बीज अपना रूप खोकर पौधा बनाता है; वैसे ही विचार शब्दों और भावों में विकसित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीज का नि:शेष गलना मूल विचार के काव्य-रचना में पूर्णतः रूपांतरित हो जाने का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: बीज के नष्ट होने को विचार की व्यर्थता न मानें; उसके नए काव्यात्मक रूप में विकसित होने की बात लिखें।

9. कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा – 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्त्तव्य है।' फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है। [5 अंक]

9(i). इस गद्यांश में किस प्रकार की अनासक्ति की बात की गई है ? [1 अंक]

(A) सांसारिक सुखों से दूर रहने की

(B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की

(C) दुखद दृश्यों से दूर रहने की

(D) सौंदर्य के बाहरी आवरण से प्रभावित होने की

सही उत्तर: (B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण और उससे निकले आशय को साथ पढ़ना आवश्यक है।
- उपमा तथा प्रतीक के संदर्भगत अर्थ को शाब्दिक या असंबद्ध अर्थ से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पाठ-संकेत गद्यांश में कहा गया है कि दुख हो या सुख, कालिदास अपना भाव-रस खींच लेते थे। अनासक्ति का अर्थ भावों से भागना नहीं, उनमें आसक्त हुए बिना उनका सार ग्रहण करना है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में सांसारिक सुखों से दूरी और (C) में दुखद दृश्यों से बचने की बात है, जबकि गद्यांश दुख और सुख दोनों को ग्रहण करने की क्षमता बताता है। (D) बाहरी आवरण से प्रभावित होने की बात करता है; कालिदास उसे भेदकर भीतर पहुँचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है – भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश की निर्णायक पंक्ति खोजिए, फिर उसी के पूरे आशय से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

9(ii). 'राजोद्यान का सिंहद्वार' का उदाहरण देकर क्या समझाने का प्रयास किया गया है ? [1 अंक]

(A) राजद्वार होने के कारण वह द्वार ही सब कुछ है।

(B) वह द्वार इतना मजबूत है कि आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता।

(C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

(D) अभ्रभेदी होने के कारण द्वार के पार नहीं जाया जा सकता।

सही उत्तर: (C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण और उससे निकले आशय को साथ पढ़ना आवश्यक है।
- उपमा तथा प्रतीक के संदर्भगत अर्थ को शाब्दिक या असंबद्ध अर्थ से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पाठ-संकेत सुंदर सिंहद्वार गंतव्य नहीं है। गद्यांश स्पष्ट करता है कि असल गंतव्य उसके पार है। यह उदाहरण बताता है कि बाहरी सौंदर्य पर रुकने के बजाय उसके भीतर छिपे व्यापक सौंदर्य तक पहुँचना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) द्वार को ही सब कुछ मानता है, जिसका अंश में निषेध है। (B) की मजबूती और तोड़े जाने की चर्चा

नहीं है। (D) पार न जा सकने की बात करता है, जबकि कथन द्वार का अतिक्रमण करने पर बल देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है – बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश की निर्णायक पंक्ति खोजिए, फिर उसी के पूरे आशय से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

9(iii). कालिदास की सौन्दर्य-दृष्टि कैसी थी ? [1 अंक]

(A) स्थूल और बाहरी

(B) सूक्ष्म और संपूर्ण

(C) अतिक्रम और अभ्रभेदी

(D) अशक्त और निर्दलित

सही उत्तर: (B) सूक्ष्म और संपूर्ण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण और उससे निकले आशय को साथ पढ़ना आवश्यक है।
- उपमा तथा प्रतीक के संदर्भगत अर्थ को शाब्दिक या असंबद्ध अर्थ से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पाठ-संकेत गद्यांश के अनुसार कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँचते थे। वे दुख और सुख दोनों से भाव-रस ग्रहण करते थे। इससे उनकी दृष्टि की सूक्ष्मता और संपूर्णता प्रकट होती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) का स्थूल और बाहरी होना कथन के विपरीत है। (C) में आए अतिक्रम और अभ्रभेदी शब्द सिंहद्वार के उदाहरण से जुड़े हैं, दृष्टि के गुण नहीं हैं। (D) की अशक्तता और निर्दलित होना भी कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि का वर्णन नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है – सूक्ष्म और संपूर्ण।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश की निर्णायक पंक्ति खोजिए, फिर उसी के पूरे आशय से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

9(iv). 'फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है' – सिद्धांत से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) वे प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

(B) वे मनुष्य के जीवन से संबंधित हैं।

(C) वे जीवन के असल प्रतीक हैं।

(D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

सही उत्तर: (D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण और उससे निकले आशय को साथ पढ़ना आवश्यक है।
- उपमा तथा प्रतीक के संदर्भगत अर्थ को शाब्दिक या असंबद्ध अर्थ से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पाठ-संकेत फूल और पेड़ को किसी अन्य वस्तु की ओर उठी अँगुली तथा इशारा कहा गया है। अर्थात् उनका दृश्य रूप ही अंतिम लक्ष्य नहीं है। वे अपने से आगे स्थित किसी गहरे अर्थ की ओर हमारा ध्यान खींचते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) प्राकृतिक सुंदरता बढ़ाने की सामान्य बात है, पर यहाँ संकेत का आशय प्रमुख है। (B) में मानव-जीवन

से संबंध और (C) में जीवन के असल प्रतीक होने की बात उतनी प्रत्यक्ष नहीं है। (D) सीधे इस कथन का अर्थ व्यक्त करता है कि वे अपने-आप में समाप्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है – वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश की निर्णायक पंक्ति खोजिए, फिर उसी के पूरे आशय से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

9(v). गद्यांश के संदर्भ में 'निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकालने से' क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) सूखे हुए गन्ने से भी रस प्राप्त करना।

(B) सामान्य वस्तु में भी सौंदर्य देखना।

(C) असंभव को भी संभव बनाना।

(D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

सही उत्तर: (D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण और उससे निकले आशय को साथ पढ़ना आवश्यक है।
- उपमा तथा प्रतीक के संदर्भगत अर्थ को शाब्दिक या असंबद्ध अर्थ से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पाठ-संकेत कृषीवल द्वारा ईक्षुदंड से रस निकालने की उपमा कालिदास की भाव-रस ग्रहण करने की क्षमता के लिए आई है। वे बाह्य आवरण से आगे बढ़कर वस्तु अथवा व्यक्ति के भीतर निहित भाव-सौंदर्य को पहचान लेते थे।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) सूखे गन्ने से रस पाने का शाब्दिक अर्थ लेता है; यहाँ सूखेपन का कथन नहीं है। (B) सामान्य वस्तु में सौंदर्य देखने की व्यापक बात है, पर आंतरिक भाव-रस का विशेष आशय नहीं बताता। (C) असंभव को संभव करने की बात करता है, जो अंश का कथ्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है – वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश की निर्णायक पंक्ति खोजिए, फिर उसी के पूरे आशय से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के लेखक ने किस प्रकार के बाज़ार को मानवता के लिए विडम्बना कहा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सार्थकता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में है।
- उपभोक्ता की विवेकहीन चाह और विक्रेता का केवल लाभ देखने वाला व्यवहार मानवीय संबंधों को नष्ट करते हैं।

चरण 1: पाठ का केंद्रीय भेद लेखक उपयोगी बाज़ार और मनुष्य पर हावी बाज़ार के बीच अंतर करते हैं। जब खरीदार अपनी आवश्यकता पहचानकर आता है, तब बाज़ार उसके काम आता है। इसके विपरीत केवल क्रयशक्ति का प्रदर्शन और अधिकाधिक माल बेचने की होड़ बाज़ार को छल तथा प्रलोभन का क्षेत्र बना देती है।

चरण 2: विडम्बना का कारण ऐसे बाज़ार में ग्राहक और दुकानदार एक-दूसरे को मनुष्य के रूप में नहीं देखते। उनके बीच सद्भाव के स्थान पर लाभ-हानि की गणना रह जाती है। एक पक्ष दूसरे की विवशता या लालसा से लाभ उठाता है। लेखक की आपत्ति उपयोगी वस्तुओं के आदान-प्रदान से नहीं, इस अमानवीय बाज़ारवाद से है। इससे विश्वास की जगह अविश्वास जन्म लेता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने उस बाज़ार को मानवता के लिए विडम्बना कहा है जहाँ मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं के स्थान पर धन, दिखावा और लाभ प्रधान हो जाते हैं। ग्राहक तथा विक्रेता में सद्भाव नहीं रहता; दोनों एक-दूसरे से लाभ उठाना चाहते हैं। ऐसा बाज़ार कपट बढ़ाता है और मानवीय संबंधों को केवल क्रय-विक्रय में बदल देता है।

चरण 4: निष्कर्ष आवश्यकताओं की पूर्ति के स्थान पर छल, धन और स्वार्थ को प्रधान बनाने वाला बाज़ार मानवता की विडम्बना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बाज़ार की वस्तुओं की आलोचना करने के बजाय ग्राहक-विक्रेता के संबंधों में सद्भाव के अभाव को स्पष्ट कीजिए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' कहानी के आधार पर लुट्टन सिंह पहलवान की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुणों के साथ कहानी की घटनाओं का प्रमाण देना चाहिए।
- लुट्टन का साहस, अभ्यास, धैर्य और लोकहित की भावना उसके संघर्षों से प्रकट होते हैं।

चरण 1: साहस और साधना के प्रमाण लुट्टन निर्भीक और आत्मविश्वासी पहलवान है। बिना किसी कुश्ती-गुरु के भी वह ढोलक की ताल से प्रेरणा लेकर चाँद सिंह जैसे प्रसिद्ध पहलवान को चुनौती देता और पराजित करता है। उसकी सफलता में केवल शारीरिक शक्ति नहीं, निरंतर अभ्यास, लगन और चुनौती का सामना करने का साहस भी दिखाई देता है।

चरण 2: विपत्ति में धैर्य और संवेदना राजाश्रय समाप्त होने पर भी वह टूटता नहीं। गाँव में महामारी फैलने और अपने दोनों बेटों की मृत्यु होने पर भी ढोलक बजाता रहता है। ढोलक की आवाज़ भयभीत ग्रामीणों को जीवन से संघर्ष करने का संबल देती है। निजी शोक के बीच दूसरों में साहस जगाना उसकी संवेदनशीलता और अदम्य जीवट का परिचायक है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लुट्टन सिंह साहसी, परिश्रमी, स्वाभिमानी और संवेदनशील पहलवान है। वह ढोलक की ताल को गुरु मानकर अभ्यास करता और प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को हराता है। राजाश्रय छिनने पर भी संघर्ष करता है। महामारी में अपने दोनों पुत्रों को खोकर भी ढोलक बजाकर गाँववालों को हिम्मत देता रहता है। उसका धैर्य तथा जीवन के प्रति जुझारूपन अनुकरणीय है।

चरण 4: निष्कर्ष लुट्टन का व्यक्तित्व साहस, साधना, धैर्य और दूसरों को जीवन-संघर्ष की प्रेरणा देने वाली संवेदना से निर्मित है।

त्वरित सुझाव: हर चारित्रिक गुण के तुरंत बाद संबंधित घटना लिखिए; चाँद सिंह से कुश्ती और महामारी में ढोलक बजाने को प्रमाण बनाइए।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि श्रम विभाजन के व्यक्तिगत रुचि पर आधारित न होने के क्या दुष्परिणाम होते हैं ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वस्थ श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि, योग्यता और कार्य चुनने की स्वतंत्रता पर आधारित होता है।
- जाति-आधारित पेशा व्यक्ति को जन्म से बाँधता है और व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता में बाधा डालता है।

चरण 1: व्यक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव जब व्यवसाय व्यक्तिगत रुचि के स्थान पर जन्म से निश्चित होता है, तो व्यक्ति को अनिच्छा से काम करना पड़ता है। उसमें काम के प्रति अरुचि और उससे बचने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। अपनी प्रतिभा के अनुकूल कार्य न मिलने से उसकी क्षमता विकसित नहीं होती तथा काम के प्रति लगन और कुशलता भी घटती है।

चरण 2: समाज और आजीविका पर प्रभाव उद्योग और परिस्थितियाँ बदलने पर पुराने काम की आवश्यकता घट सकती है। जाति के बंधन व्यक्ति को दूसरे व्यवसाय में जाने से रोकते हैं, इसलिए बेरोज़गारी और आर्थिक संकट बढ़ते हैं। लेखक के अनुसार काम करने वालों का काम से मन न लगना समाज की आर्थिक व्यवस्था को भी हानि पहुँचाता है। जन्म से पेशा तय करना उपयोगी श्रम-विभाजन नहीं बन पाता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर व्यक्तिगत रुचि पर आधारित न होने से श्रम-विभाजन व्यक्ति पर अनचाहा पेशा थोप देता है। इससे कार्य के प्रति अरुचि, उदासीनता और अकुशलता बढ़ती है तथा उसकी प्रतिभा का विकास रुकता है। परिस्थितियाँ बदलने पर जातिगत बंधन उसे दूसरा व्यवसाय अपनाने नहीं देते। फलतः बेरोज़गारी, आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक उत्पादन में कमी जैसे दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष रुचि और स्वतंत्रता की उपेक्षा व्यक्ति की क्षमता तथा समाज की आर्थिक प्रगति, दोनों को बाधित करती है।

त्वरित सुझाव: पहले अनचाहे काम से अरुचि का परिणाम बताइए, फिर व्यवसाय बदलने पर रोक को बेरोज़गारी से जोड़िए।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पानी की बुवाई' से जीजी का क्या अभिप्राय था ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी जल अर्पित करने को त्याग और वर्षा की आशा से जोड़ती हैं।
- बुवाई का रूपक थोड़ा बीज देकर अधिक फसल पाने की लोकमानस की धारणा को व्यक्त करता है।

चरण 1: बुवाई के रूपक का अर्थ जैसे किसान अपनी बची हुई उपज में से बीज खेत में डालता है और उससे अधिक अन्न मिलने की आशा करता है, वैसे ही जीजी थोड़ा पानी देकर अधिक वर्षा की आशा करती हैं। उनके लिए पानी देना केवल उसे खर्च करना नहीं, आगे पानी पाने के लिए किया गया त्याग है। सूखे में भी बचा हुआ पानी अर्पित करना उनके इस विश्वास को व्यक्त करता है कि पहले कुछ देना आवश्यक है। इसी तुलना से वे लेखक को पानी देने का औचित्य समझाती हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी के अनुसार इंदर सेना पर थोड़ा पानी डालना वर्षा के लिए पानी बोना था। जैसे किसान बीज बोकर अधिक अन्न पाता है, वैसे ही जल का दान करके अधिक पानी मिलने की आशा की जाती है। इसमें त्याग और लोकविश्वास निहित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'पानी की बुवाई' थोड़ा जल अर्पित करके भरपूर वर्षा की आशा का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: बीज और फसल के संबंध से थोड़ा पानी देने तथा अधिक वर्षा पाने की आशा स्पष्ट कीजिए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि भक्तिन की निष्ठा और सेवा-भाव आज की जीवन-स्थितियों में भी प्रेरणादायक हो सकते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण 'भक्तिन' में सेवा केवल नौकरी का संबंध नहीं, आत्मीयता और संकट में साथ निभाने का मानवीय मूल्य है।
- उत्तर में पाठ की घटना को वर्तमान जीवन से जोड़ना चाहिए; केवल भक्तिन को अच्छी सेविका कहना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पाठ में निष्ठा का आधार भक्तिन लेखिका के साथ लंबे समय तक रहती है और उनके सुख-दुख में सहभागी बनती है। लेखिका

के जेल जाने की संभावना पर वह साथ जाने का उपाय सोचती है। आर्थिक कठिनाई आने पर अपनी बचत देने को तैयार होना भी उसके संबंध की आत्मीयता दिखाता है। इस सेवा का आधार केवल वेतन नहीं, अपनापन है।

चरण 2: आज की परिस्थितियों से संबंध व्यस्त जीवन में परिवार के वृद्धों, बीमार व्यक्तियों और संकटग्रस्त सहयोगियों की सहायता के लिए ऐसी ही संवेदना चाहिए। भक्तिन से प्रेरणा लेने का अर्थ किसी से एकतरफा सेवा की अपेक्षा करना नहीं है; सेवा करने वाले के श्रम और स्वाभिमान का सम्मान भी आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन का लेखिका के संकट में साथ देने तथा अपनी बचत सौंपने का भाव निष्ठा और आत्मीय सेवा का उदाहरण है। आज व्यस्त जीवन में वृद्धों, रोगियों और संकटग्रस्त साथियों की सहायता हेतु यही संवेदनशीलता, भरोसा और समर्पण प्रेरणादायक हैं।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन का निस्वार्थ सहयोग आज भी मानवीय संबंधों को आत्मीय और विश्वसनीय बनाने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: पहले भक्तिन की सेवा का एक ठोस प्रसंग दें, फिर उसे आज के पारिवारिक या सामाजिक जीवन से जोड़ें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर मनुष्यों की वास्तविक क्षमताओं में अंतर स्वीकार करते हैं, किंतु इस अंतर को असमान अधिकारों का आधार नहीं मानते।
- पाठ में शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और व्यक्तिगत प्रयत्न को क्षमता के तीन निर्धारक बताया गया है।

चरण 1: क्षमता के तीन आधार पहचानें पहला आधार शारीरिक वंश-परंपरा है। दूसरा सामाजिक उत्तराधिकार है, जिसमें माता-पिता का पालन-पोषण, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञान जैसी अर्जित उपलब्धियाँ आती हैं। तीसरा आधार व्यक्ति का अपना प्रयत्न है। इसलिए किसी की उपलब्धि को केवल उसकी जन्मजात योग्यता अथवा केवल मेहनत का फल मानना अधूरा होगा।

चरण 2: समान अवसर से संबंध समझें पहले दो आधार व्यक्ति के अपने नियंत्रण में नहीं होते। अनुकूल परिवार और शिक्षा पाने वाला व्यक्ति आरंभ से लाभ की स्थिति में हो सकता है। सभी को विकास का समान अवसर देना आवश्यक है, ताकि व्यक्तिगत प्रयास और योग्यता को सामने आने का अवसर मिले। क्षमता का अंतर सामाजिक भेदभाव को उचित नहीं बनाता।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आंबेडकर के अनुसार मनुष्य की क्षमता शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और अपने प्रयत्नों पर निर्भर करती है। सामाजिक उत्तराधिकार में माता-पिता का पालन-पोषण, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञान का अर्जन शामिल हैं। इसलिए क्षमता के विकास हेतु समान अवसर आवश्यक हैं।

चरण 4: निष्कर्ष मनुष्य की क्षमता वंशानुगत आधार, सामाजिक परिस्थितियों और व्यक्तिगत प्रयास के संयुक्त प्रभाव से विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: क्षमता के तीनों आधार क्रम से लिखें और सामाजिक उत्तराधिकार में शिक्षा तथा पालन-पोषण को अवश्य शामिल करें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

"जिम्मेदारी सर पर पड़ेगी तब सब अपने ही आप ठीक हो जाएँगे।" यशोधर बाबू का ऐसा सोचना कहाँ तक सही था ? यदि आपको कोई जिम्मेदारी दी जाए तो आप उसका निर्वहन कैसे करेंगे ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी के बीच जीवन-मूल्यों तथा व्यवहार को लेकर दूरी दिखाई गई है।
- प्रश्न में कथन का संतुलित मूल्यांकन और अपने दायित्व-निर्वहन का उदाहरण, दोनों अपेक्षित हैं। जिम्मेदारी परिपक्वता ला सकती है, लेकिन परिवर्तन अपने-आप होने की निश्चितता नहीं है।

चरण 1: यशोधर बाबू के विश्वास को समझें यशोधर बाबू मानते हैं कि परिवार और काम का भार पड़ने पर युवाओं का व्यवहार सुधर जाएगा। इस विश्वास में अनुभव का आधार है: दायित्व मिलने पर व्यक्ति को संसाधनों का मूल्य, दूसरों की आवश्यकताएँ और निर्णयों के परिणाम समझने पड़ते हैं। इसलिए उनका सोचना पूरी तरह निराधार नहीं है। कहानी में बच्चों और पिता की अलग जीवन-दृष्टियाँ इस कथन की पृष्ठभूमि बनती हैं।

चरण 2: विश्वास की सीमा स्पष्ट करें फिर भी यह मान लेना कि सब अपने-आप ठीक हो जाएगा, पर्याप्त नहीं है। पीढ़ियों के मतभेद केवल दायित्व का भार पड़ने से समाप्त नहीं होते। संवाद, परस्पर सम्मान, मार्गदर्शन और आत्मचिंतन भी जरूरी हैं। यशोधर बाबू को नई पीढ़ी की परिस्थितियाँ समझनी चाहिए और बच्चों को उनके अनुभवों तथा भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। उत्तर का उद्देश्य किसी एक पीढ़ी को दोषी ठहराना नहीं, कथन की आंशिक सत्यता स्पष्ट करना है।

चरण 3: अपने दायित्व की कार्ययोजना बनाएँ उदाहरण में कोई वास्तविक छात्र-जीवन का काम चुन सकते हैं, जैसे विद्यालय का पुस्तक-संग्रह अभियान। पहले उद्देश्य और समय-सीमा निश्चित करें, फिर सहयोगियों से चर्चा करके काम बाँटें। प्रगति की जाँच, कठिनाई पर सहायता और अंत में हिसाब प्रस्तुत करना जिम्मेदारी निभाने के ठोस तरीके हैं। यह उदाहरण काल्पनिक व्यक्तिगत स्थिति है, कहानी की घटना नहीं है।

चरण 4: लगभग 100 शब्दों में उत्तर यशोधर बाबू का विचार आंशिक रूप से सही है। जिम्मेदारी मिलने पर व्यक्ति समय, श्रम और धन का महत्त्व समझता है तथा दूसरों की जरूरतों के प्रति सजग होता है। किंतु केवल भार पड़ने से सब अपने-आप ठीक नहीं होता; संवाद, मार्गदर्शन और आत्मचिंतन भी आवश्यक हैं। नई पीढ़ी से उनकी दूरी आपसी समझ से घट सकती थी। यदि मुझे विद्यालय के पुस्तक-संग्रह अभियान का दायित्व मिले, तो मैं लक्ष्य और समय-सीमा तय करूँगा, साथियों की सहमति से कार्य बाँटूँगा तथा नियमित प्रगति जाँचूँगा। कठिनाई आने पर सहायता लूँगा और अंत में पुस्तकों तथा खर्च का स्पष्ट हिसाब दूँगा।

चरण 5: निष्कर्ष जिम्मेदारी सुधार का अवसर देती है; उसका सफल निर्वहन सजग प्रयास, सहयोग और उत्तरदायित्व से होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कथन का आंशिक समर्थन, उसकी सीमा और अपने काम का ठोस उदाहरण, ये तीनों पक्ष शामिल करें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

मराठी मास्टर जी न.वा. सौंदलगेकर के अध्यापन की किन विशेषताओं से लेखक अत्यधिक प्रभावित था और इन विशेषताओं का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ? 'जूझ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंद यादव ने मराठी शिक्षक न.वा. सौंदलगेकर के माध्यम से साहित्य के सजीव अध्यापन और विद्यार्थी की सुप्त प्रतिभा के विकास का संबंध दिखाया है।
- चरित्रगत विशेषता बताते समय उसके साथ पाठ का प्रसंग और लेखक पर उसका प्रभाव जोड़ना चाहिए। यहाँ कविता का सस्वर पाठ,

भावपूर्ण अभिनय और शिक्षक का प्रोत्साहन मुख्य आधार हैं।

चरण 1: अध्यापन की विशेषताएँ पहचानें सौंदलगेकर कविता को केवल अर्थ समझाने तक सीमित नहीं रखते थे। उनका मधुर स्वर, छंद और लय की समझ, उपयुक्त हाव-भाव तथा भावपूर्ण प्रस्तुति कविता को जीवंत बनाते थे। वे अपनी और दूसरे कवियों की कविताएँ सुनाते तथा कवियों से जुड़े अनुभव बताते थे। इससे लेखक को कविता किसी दूर की, असाधारण वस्तु के बजाय अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति लगने लगी।

चरण 2: लेखक के विकास से संबंध जोड़ें शिक्षक की प्रस्तुति का अनुकरण करते हुए लेखक कविता गुनगुनाने लगा। खेत में काम करते समय भी वह लय और भावों में रमने लगा। उसके मन में अपनी कविता बनाने का विश्वास जागा। शिक्षक ने उसकी रचनाएँ सुनकर प्रोत्साहन दिया और सुधार का मार्ग बताया। उत्तर में प्रभाव को केवल परीक्षा की सफलता तक सीमित न रखें; यहाँ संवेदना, कल्पना और स्वतंत्र काव्य-सृजन का विकास महत्त्वपूर्ण है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर सौंदलगेकर मास्टर का अध्यापन सरस और प्रेरणादायक था। वे मधुर स्वर, उचित लय तथा हाव-भाव से कविताएँ सुनाकर उनके भाव सजीव कर देते थे। अपनी और अन्य कवियों की रचनाएँ सुनाते समय वे कवियों से जुड़े अनुभव भी बताते थे। इससे लेखक की कविता में रुचि जागी और उसे लगा कि वह भी अपने अनुभवों पर कविता लिख सकता है। खेतों में काम करते हुए वह कविताएँ गुनगुनाने तथा नई पंक्तियाँ रचने लगा। मास्टर जी ने उसकी रचनाएँ सुनकर प्रोत्साहित किया और सुधार सुझाए। इस प्रकार उनके अध्यापन ने लेखक की कल्पनाशक्ति, आत्मविश्वास और काव्यप्रतिभा को विकसित किया।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर की भावपूर्ण प्रस्तुति और व्यक्तिगत प्रोत्साहन ने लेखक को कविता का रसिक ही नहीं, स्वयं कविता रचने वाला संवेदनशील विद्यार्थी बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक विशेषता के साथ उसका प्रभाव जोड़ें: सस्वर पाठ से रुचि, कवियों के अनुभवों से विश्वास और प्रोत्साहन से काव्य-सृजन का विकास।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

मुअनजोदड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर ही नहीं था उसे साधनों और व्यवस्थाओं से भी समृद्ध माना गया है फिर भी इसकी संपन्नता की बात कम क्यों हुई है ? इस सभ्यता की प्रसिद्धि के लिए आपकी दृष्टि में क्या उपाय किये जा सकते हैं ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में ओम थानवी मुअनजोदड़ो के अवशेषों से ऐसी नागरिक संस्कृति पहचानते हैं जिसमें सुव्यवस्था और सामूहिक जीवन का महत्त्व राजसत्ता के प्रदर्शन से अधिक था।
- प्रश्न के दो पक्ष हैं: संपन्नता की चर्चा अपेक्षाकृत कम होने का पाठाधारित कारण और इस सभ्यता के परिचय के विस्तार के लिए अपने व्यावहारिक सुझाव। दोनों का स्पष्ट उत्तर आवश्यक है।

चरण 1: संपन्नता और उसके प्रदर्शन का अंतर समझें नगर की योजनाबद्ध सड़कें, जलनिकासी, स्नानागार और आवास उसकी उन्नत व्यवस्था के प्रमाण हैं। किंतु वहाँ भव्य राजमहलों, विराट धार्मिक स्मारकों या राजकीय शक्ति के चकाचौंध भरे प्रदर्शन के प्रमाण प्रमुख नहीं हैं। अतः उसकी समृद्धि को केवल शासकीय वैभव की कसौटी पर पहचानना कठिन है। पाठ का आशय शहर को निर्धन बताना नहीं, उसके नागरिक और सांस्कृतिक विकास की विशिष्टता दिखाना है।

चरण 2: प्रसिद्धि के लिए ठोस उपाय चुनें अवशेषों का वैज्ञानिक संरक्षण मूल आवश्यकता है। संग्रहालय, विद्यालयी अध्ययन, प्रमाणिक वृत्तचित्र, चित्र-सहित डिजिटल सामग्री तथा निर्देशित यात्राएँ लोगों को उस सभ्यता से परिचित करा सकती हैं। प्रचार में सनसनीखेज दावों के बजाय नगर-योजना, स्वच्छता और सार्वजनिक सुविधाओं के प्रमाण दिखाने चाहिए। इससे प्रसिद्धि के साथ उसकी वास्तविक ऐतिहासिक उपलब्धियों की समझ भी बढ़ेगी।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर मुअनजोदड़ो की संपन्नता भव्य राजमहलों अथवा राजसत्ता के प्रदर्शन में नहीं, सुव्यवस्थित नागरिक जीवन में प्रकट होती है। वहाँ योजनाबद्ध सड़कें, जलनिकासी, स्नानागार और उपयोगी सार्वजनिक व्यवस्थाएँ थीं। विशाल स्मारकों

तथा राजकीय वैभव की अपेक्षा साधारण नागरिकों की सुविधाओं को महत्त्व मिलने से उसकी समृद्धि की चर्चा अपेक्षाकृत कम हुई। इससे वह सभ्यता कम विकसित सिद्ध नहीं होती। उसकी प्रसिद्धि बढ़ाने के लिए पुरातात्त्विक अवशेषों का संरक्षण, संग्रहालयों का विकास, विद्यालयों में रोचक अध्ययन तथा प्रमाणिक वृत्तचित्र और डिजिटल प्रदर्शनी उपयोगी होंगे। पर्यटन द्वारा भी लोगों को उसकी नगर-योजना, स्वच्छता और नागरिक संस्कृति की उपलब्धियों से परिचित कराया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष मुअनजोदड़ो की असली संपन्नता नागरिक सुविधाओं और विकसित संस्कृति में थी। उसका संरक्षण तथा प्रमाणों पर आधारित व्यापक परिचय उसकी उपलब्धियों को उचित पहचान दे सकते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले नागरिक समृद्धि और राजकीय वैभव का अंतर स्पष्ट करें; फिर संरक्षण तथा शिक्षा और संग्रहालय जैसे प्रसिद्धि बढ़ाने के ठोस उपाय लिखें।